ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 57-60

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

भारतीय चित्रकला में प्रयुक्त प्रतीकों का मन्तव्य एवं महत्व

डॉ0 उमाशंकर प्रसाद

एसो0 प्रोफेसर– चित्रकला विभाग, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर (उ0प्र) भारत

Received- 04 .10. 2021, Revised- 09 .10. 2021, Accepted - 13.10.2021 E-mail: umashankarprasad25@gmail.com

सारांशः *भारतीय चित्रकला में प्रतीकों का उद्भव कला में आरंभ से ही शुरु होता है। जब मानव जीवन शुरू हुआ था, तभी मानव ने विभिन्न स्थानों, गुफाओं, शीलाखंडों आदि पर अपने मनोभावों द्वारा चित्रित किया था।*

इन प्रतीकों द्वारा ही हम जीवन का विभिन्न स्थितियों प्रेम, घृणा, व्याकुलता, दुःख व दया आदि को चित्रित करते हैं। प्रतीकों द्वारा ही भारतीय चित्रकला आपने विभिन्न रूपों को प्रदर्शित करती है।

भारतीय चित्रकला में प्रयुक्त प्रतीकों की प्रासंगिकता एवं परिकल्पना बहुत ही महत्वपूर्ण एवं विशिष्ट है। प्रतीकों की विशिष्टता सभी प्रारूपों एवं विषयों में महत्वपूर्ण हैं। विभिन्न क्षेत्रों में प्रतीकों के द्वारा कला के विभिन्न रूपों को चित्रित किया गया है। यह भी कला का एक भाव है। कला एवं चित्रकला में प्रतीकों द्वारा प्रसंगों में रोचकता व प्रभाविता संचालित की गई है। भारतीय चित्रकला को प्रतीकों द्वारा प्रभाविता पूर्ण होने के साथ–साथ सुंदरता प्रदान की गई हैं। शोध परिकल्पना की पृष्ठभूमि के अंतर्गत प्रतीकों का विशिष्टतम अध्ययन व परिकल्पना की जा सकती हैं।

भारतीय चित्रकला में प्रतीकों द्वारा हम अपने मनोभावों व कला विचारों को मुख्य रूप से प्रकट कर पाते हैं। प्रतीक अपने आप में एक अनोखे छोटे चिन्ह हैं। जो पूरा व सच्चा अर्थ प्रकट करते हैं। मानव में अपने आरंभ से ही प्रतीकों द्वारा गुफाओं आदि में शिकार, प्रेम, दया, व्याकुलता आदि विषयों को खूब चित्रत किया है। भारतीय कला का उद्भव होते ही प्रतीक चित्रण आरंभ हो गया था और यह चित्रण मानव जीवन के आधुनिक काल तक भी अपना वैभव प्रकट कर रहा है।

कुंजीभूत शब्द– भारतीय चित्रकला, शीलाखंडों, घृणा, व्याकुलता, भारतीय चित्रकला, विशिष्टता, परिकल्पना ।

भारतीय चित्रकला के उद्भव में ही प्रतीक चित्रण विभिन्न रंगों के माध्यम से किया गया। प्रागैतिहासिक काल के अंतर्गत आने वाले विभिन्न रूपों को व युगों को प्रतीक चित्रणों के माध्यम से रचित किया गया है। प्रागैतिहासिक काल में मानव ने प्रतीक चित्रण के माध्यम से अपने मन की भावनाओं और विचारों को खूब चित्रित किया और प्रदर्शित किया। यह चित्रण आज हमारी कला व संस्कृति की अनमोल धरोहर है। इन क्षेत्रों के अंतर्गत आजमगढ़, रायगढ़, पंचमढ़ी, चक्रधरपुर, सिंघनपुर, भीमबेटका, होशंगाबाद और मिर्जापुर आदि स्थानों पर प्रतीक चित्रण बखूबी किया गया है।

आदिम चित्रकार या मनुष्यों की विषय वस्तु मुख्य रूप से बारहसिंघा, हाथी, घोड़ा, सूअर, गैंडा, भालू, हिरण आदि पशुओं को शिकार करते हुए प्रतीकों द्वारा चित्रत किया गया है। मध्य प्रदेश के अंतर्गत ये क्षेत्र अधिकतर पाए जाते हैं जिनमें प्रतीक चित्रण मुख्य रूप से किया गया है। भारतीय चित्रकला के उद्भव एवं विकास में नृत्य चित्रण भी प्रतीकों के माध्यम से दर्शाया गया है। इसके अलावा तख्तीनुमा व डमरुनुमा आ.तियों को भी प्रतीक के रूप में दिखाया गया है। प्राचीन भारतीय चित्रकला का मुख्य विषय आखेट रहा है जिसको प्रतीकों के माध्यम से खूब चित्रित किया गया है।

प्रतीकों के द्वारा कलाकार जीवन के स्थिरता, परिवर्तनशीलता उसमें व्याप्त सुख, दुःख, प्रेम, घृणा, आरोह, अवरोह आदि की अभिव्यंजना करने में समर्थ होता है। प्रतीक शब्द के अर्थ को स्पष्ट करने हेतु प्रतीक के समानांतर प्रयुक्त होने वाले कुछ अन्य शब्द जैसे – बिंब, चिन्ह एवं संकेत से उसका संबंध एवं अंतर स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है।

प्रागैतिहासिक कला में प्रतीक चित्रण के बाद धीरे–धीरे भारतीय चित्रकला ने विभिन्न रूप ले लिए तथा नवीन विषयों को भी प्रतीकों द्वारा चित्रित किया जा रहा है। नवीन कला के अंतर्गत अमूर्त कला चित्रण बखूबी एक नवीन प्रयोग की तरह प्रतीकों को स्थान देकर हो रहा है। भारतीय चित्रकला के नवीन रुप प्रतीकों द्वारा जीवंत किए जा रहे हैं।

भारतीय चित्रकला के उद्भव से विकास होते होते क्रमिक अध्ययन ने प्रतीकों का खूब चित्रण होता गया। इन प्रतीकों को चित्रों में एक अर्थ प्रदान किया गया है, जैसे कोई आखेट का चित्र है, तो इसमें पूरा चित्र न बनाकर प्रतीकों के माध्यम से शिकार करना दिखाया जाता है। इसके अलावा प्रेम विषय लिया जाए तो उसमें नायक नायिकाओं, दिल व कबूतर के जोड़े आदि को प्रतीकों के माध्यम से दर्शाकर प्रेम का भाव प्रदर्शित किया जाता है।

भारतीय चित्रकला के प्रत्येक काल में धार्मिक प्रतीकों का ही बाहुल्य रहा है। इन प्रतीकों में ब्रह्मा, विष्णु, महेश सृष्टि के रहस्यों को प्रकट करने के साथ–साथ मानव जीवन को उन्नतिशील बनाने के अर्थ में छिपे हैं। इन प्रतीकों का उद्देश्य ज्योति और तम, अमृत और मृत्यु के द्वंद की व्याख्या करना भी रहा है।

वैदिक काल में विष्णु, चंद्र, सूर्य, मिथुन, वामन, अर्धनारीश्वर आदि प्रतीक रूप सुंदर और गूढ अर्थों की व्यंजना करते

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

हैं। हिंदू धर्म के अतिरिक्त बौद्ध और जैन धर्मों से संबंधित प्रतीकों का समावेश भी भारतीय चित्रकला में हुआ। प्रतीकों का मानव जीवन में कल्याणकारी महत्व को स्पष्ट करते हुए भारतीय चित्रकला के विभिन्न कालों में उनकी स्थिति और महत्व को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है।

पौराणिक व धार्मिक चित्रणों को जैसे – रामायण, महाभारत, शिव पुराण व जातक कथाओं आदि को भी प्रतीकों के माध्यम से चित्रित किया गया है। प्रतीकों के माध्यम से पशु पक्षियों, मानव भावनाओं को भी प्रतीकों के द्वारा सूक्ष्म रूप में भारतीय चित्रकला में दिखाया गया हैं तथा प्रतीकों का अर्थ को प्रकट किया गया है। प्रतीकों का अर्थ मुख्य रूप से इन सभी चित्र विषयों से प्रकट होता है।

भित्ति चित्रण भी भारतीय चित्रकला का एक मुख्य भाग रहा है, जिसमें प्रत्येक चित्रण की अमिट छाप है। भित्तियों पर की गई चित्रकारी में सुखी तथा गिली सतहों पर प्रतीकों को द्वारा विभिन्न विषयों को चित्रित किया गया है। भित्ति चित्रण में छोटे से छोटे व बड़ें से बड़ें चित्रों को प्रतीकों द्वारा दर्शाया गया है जिसमें प्रतीकों का बहुत ही विशिष्ट योगदान है। भित्ति चित्रण में विभिन्न धर्मों जैसे – बौद्ध धर्म, हिंदू धर्म, जैन धर्म आदि को प्रतीकों द्वारा चित्रित किया गया है।

इनके अलावा भित्तियों पर अन्य विषयों को भी प्रतीकों द्वारा चित्रित किया गया है। भित्ति चित्रण भारतीय चित्रकला में बहुत ही पुरातन चित्रकला है। इस चित्रकला में प्रतीकों के माध्यम से बहुत से चित्रण विषयों को बहुत ही महत्वपूर्ण व मार्मिक ढंग से चित्रित किया गया है। भित्ति चित्रण में धार्मिक प्रतीकों के अतिरिक्त भावनात्मक प्रतीकों के अंतर्गत मानवीय भावों का जैसे श्रृंगार, घृणा, शोक, हास, करुणा आदि को चित्रित किया गया है। इन प्रतीकों में देहजन्य मुद्राओं को सुंदरता से प्रस्तुत किया गया है। 'अजंता', 'बाघ', 'सिगिरिया', 'बादामी' आदि गुफाओं में पीले, नारंगी, लाल रंगों आदि से बहुत ही मार्मिक प्रतीकात्मक चित्रण किया गया है। पशु पक्षी प्रतीकों द्वारा भी मानवीय और दैवीय भावों की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति भारतीय चित्रकला में प्राप्त होती है।

भित्ति चित्र मुख्य रूप से भवनों, गिरजाघरों, मंदिरों मस्जिदों आदि में मुख्य रूप से किया गया है जिनको प्रतीकों द्वारा विस्तृत रूप दिया गया है। भित्तियों पर विभिन्न प्रकार के हल्के व चमकीलें रंगों द्वारा मार्मिक प्रतीकात्मक चित्रण हुआ है। अतः भित्ति चित्रों को भी प्रतीकों द्वारा अनुपम रूप में चित्रत किया गया है जिनमें एक अलग ही अर्थ निकल कर सामने आता है। भारतीय चित्रकला के अंतर्गत भित्ति चित्रण में विभिन्न तकनीकों के साथ–साथ उपरोक्त विषयों का चुनाव किया गया है। भित्ति चित्रण की परंपरा बहुत ही प्राचीन परंपरा है। इसके अंतर्गत बहुत ही अनोखा एवं मार्मिक चित्रण किया गया है। प्रतीकों का मानव जीवन में कल्याणकारी महत्व है। भारतीय चित्रकला में प्रतीक अपने आप में एक विशिष्ट स्थान लिए हुए हैं। अर्द्ध पशु पक्षी और अर्द्ध मानव के मिश्रित रूप प्रतीक लघु चित्रकला के कलाकारों के अनुपम उदाहरण हैं। इनमें मानव शरीर के ऊपरी भाग में अथवा निम्न भाग में पशु पक्षियों की आ.तियां चित्रित की गई है। नरसिंह, वराह, गणपति, अवतार, गरुड़, महिषासुर आदि ऐसे ही प्रतीक रूप है।

राग रागिनी संबंधी चित्रों में भी इन पशु पक्षियों को राग रागिनी की भावना के प्रतीक स्वरूप अंकित किया गया है। भारतीय धर्म और कला में वृक्ष हमेशा से श्रद्धा के विषय रहे हैं। यहां वृक्षों को कल्याणकारी भावनाओं के साथ जोड़ा गया है। यहां ब्रह्मा के सुंदर प्रतीक स्वरूप भी अंकित किए गए हैं।

भारतीय कला में विभिन्न प्रतीकों को एक जगह करके उनको एक कथा के रूप में चित्रित किया गया है। "समुद्र मंथन", "पृथ्वी उद्धार" आदि ऐसी ही प्रतीकात्मक कथाएं है। ये भारत के प्राचीन वैदिक परंपराओं का अध्ययन है। भारतीय चित्रकला में लघु चित्रकला में प्रयुक्त प्रतीकों का भी बहुत ही सुंदर वह प्रभावपूर्ण चित्रण किया गया है। भारतीय लघु चित्रकला बहुत ही प्रसिद्ध चित्रकला है। लघु चित्रकला के अंतर्गत विभिन्न विषयों जैसे प्रेम, शिकार, बारहमासा, पौराणिक आदि पर खूब चित्रण हुआ है। भारतीय लघु चित्रकला भी भारतीय चित्रकला का मुख्य अंग है। इस चित्रकला में भी चित्रकार ने विभिन्न प्रकारों द्वारा प्रतीकात्मक चित्रण किया है। मानव कलाकार द्वारा इस चित्रण शैली को भी बड़े मार्मिक ढंग से भिन्न–भिन्न प्रकारों में चित्रित किया है।

प्रतीकों का चित्रण भारतीय लघु चित्रों में बखूबी किया गया है व ये चित्रकला ऐसी चित्रकला है जो इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। भारतीय लघु चित्रकला के अंतर्गत विषयों को प्रतीकों द्वारा बखूबी चित्रित किया गया है। उन विषयों के चित्रण की प्रतीकात्मक चित्रण द्वारा बहुत महत्ता बढ़ गई हैं। इस कला में भी पृथक पृथक विषयों द्वारा चित्रण किया गया है। कल्पवृक्ष का प्रतीक भारतीय कलाओं का अप्रतिम प्रतीक है। यहां सुख समृद्धि देने वाला है। देव आसन के रूप में पद्म का अंकन सर्वश्रेष्ठ हैं वह संपूर्ण सृष्टि पर ब्रह्मा के आधिपत्य दर्शाता है। भारतीय कला में प्रतीकात्मक चित्रण द्वारा चित्रण की महत्व बढ़ गई है व यह चित्रण अपने आप में विशिष्ट हो गया है। लघु चित्रकला में प्रतीकों द्वारा प्रेम, शिकार, आखेट के आस

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

पास के दृश्यों को खूब चित्र किया है। भारतीय चित्रकला के प्रत्येक काल में प्रतीकों का धार्मिक रूप से भी विशिष्ट स्थान रहा है। वैदिक काल में गणपति, अंबिका, पूर्ण कुंभ, विराट रूप आदि को सुंदर प्रतीकों द्वारा चित्रित किया गया है। भारतीय लघु चित्रकला प्रतीकों के चित्रण से युक्त होकर बहुत ही विशिष्ट एवं सुंदर हो गई हैं। मानवीय भावनाओं यथा प्रणय, विरह आदि के प्रतीक स्वरूप भी इन पशु पक्षियों का अंकन सुंदर है। संयोग वियोग के चित्रों में कपोत व पपीहा, मयूर, सारस, काग, हंस, मृग, मेढा आदि पशु पक्षियों का अंकन नायक–नायिका की ह्रदयगत भावनाओं तथा अप्रस्तुत नायक–नायिका के प्रतीक स्वरूप है। पशु–पक्षी व ज्यामितीय चित्रों में भी प्रतीक चित्रण का मुख्य विषय देखने को मिलता है। चित्रकारों ने कृष्ण और राधा के रूप में लौकिकता और अलौकिकता का सम्मिश्रण प्रतीकों द्वारा किया है। भारतीय चित्रकला में प्रतीकों के प्रयोग और महत्व के पश्चात कांगड़ा चित्रकला के उद्भव और विकास का वर्णन है। प्रतीकों के प्रयोग की दृष्टि से इन विभिन्न विषयों का चित्रण विशिष्ट हो गया है।

प्रतीक शब्द का अर्थ स्पष्ट करने हेतु प्रतीक के समानांतर प्रयुक्त होने वाले कुछ अन्य शब्द यथा बिंब, चिन्ह एवं संकेत से उसका संबंध एवं अंतर स्पष्ट होता है। प्रतीक चित्रण एक विशिष्ट चित्रण है जो विभिन्न विषयों में प्रयुक्त होता है। भारतीय लोक–चित्रों में भी प्रतीकों का बहुत ही अधिक एवं सुंदर चित्रण हुआ है।

भारतीय कला में मानव ने ऋतु चित्रण भी प्रतीकात्मक रूप में बहुत विशिष्टता के साथ किया है। चित्रकारों ने मानव के ह्रदयगत भावों को ऋतुओं के माध्यम से प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की गई है। नव यौवन के ह्रदयगत, उल्लास और हर्ष दायिनी अनुभूति को नवपल्लव और नवप्रसूत युक्त बसंत विरहाग्नि की तपन को ग्रीष्म ऋतु द्वारा दर्शाया गया है।

शरद का चित्रण प्रेम को वर्धन करने वाले ऋतु के प्रतीक स्वरूप हुआ है। यह ऋतु संयोग अवस्था को प्राप्त नायक–नायिकाओं के मध्य प्रेम की सरसता और पवित्रता की सुंदर प्रतीक होती है। इस ऋतु के आकाश की निर्मल चांदनी और चंद्र के द्वारा ब्रह्मा और जीवात्मा की अभिन्नता को तथा आत्मा परमात्मा के निर्मल और स्वच्छ प्रेम को प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की गई हैं। 'रास मंडल' नामक चित्र इसका सुंदर उदाहरण है।

भारतीय लोक कला एक विशिष्ट कला है जो भारतीय चित्रकला इतिहास में एक अभूतपूर्व स्थान रखती हैं। इस कला के अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों व स्थानों के रहन–सहन व प्रभावों का पता लगता है। इस कला में मानव जीवन के उद्देश्यों व कार्यों का लेखा–जोखा प्रस्तुत किया गया है। भारतीय लोक कला व अलग–अलग क्षेत्रों की अलग–अलग विशेषता लिए होती है जिसमें प्रतीकों द्वारा बहुत ही सुंदर चित्रण किया गया है।

चित्रों की पृष्ठभूमि में अंकित प्राकृतिक दृश्यों को सुंदर भावों के प्रतीक स्वरूप अंकित किया गया है। नदी तट, सरोवर, चांदनी रात्रि रमणीय, वनस्थली, सूर्य आदि दृश्य प्रेममयी भावनाओं आदि को चित्रित किया गया है। देवी शक्तियों के द्वारा आसुरी शक्तियों पर विजय के प्रतीक स्वरूप उषा कालीन दृश्य का अंकन सुंदर बन पड़ा है। उषा जीवन में आने वाले सुखद क्षणों के प्रतीक स्वरूप अंकित की गई हैं। धर्म संबंधित चित्रों में प्राकृतिक दृश्य विभिन्न गूढ़ भावों से ओत–प्रोत है। लोक चित्रकला के प्रमुख बिंदुओं व प्रकारों में प्रतीकों का चित्रण किया गया है। भारतीय लोक कला में विभिन्न क्षेत्रों के रहन–सहन को भी प्रतीकों द्वारा बखूबी चित्रित किया गया है।

लोककला अपने आप में एक विशिष्ट कला है, जो भारतीय कला इतिहास में चार–चांद लगा देती है। इस कला में मानव जीवन की प्रेमपूण र्व जीवन पर आधारित कला प्रस्तुत होती है। लोक कला प्रतीकों द्वारा अपने आप में और भी विशिष्ट हो जाती हैं। प्रतीक चित्रण लोक कला में भी अपनी खूब वशिष्टा दर्शाता है तथा उसमें अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस कला के अंतर्गत भी चित्रकला के विभिन्न आयाम और अर्थ प्रतीकों द्वारा सुंदरता पूर्वक उजागर होते हैं।

भारतीय चित्रकला के अंतर्गत आधुनिक रूप में भी प्रतीकों का चित्रण हुआ है। आधुनिक काल के चित्रकारों ने भी एक अनूठी चित्रकला भारतीय कला इतिहास को दी। आधुनिक चित्रकला के अंतर्गत बहुत से विषयों पर आधारित चित्रण हुए हैं जो अपने आप में एक विशिष्टता लिए हुए है। इन चित्राकृतियों में भी प्रतीकों का विशिष्टतापूर्वक चित्रण किया है। आधुनिक भारतीय चित्राकृतियो में प्रतीकों द्वारा विभिन्न अर्थ दर्शाए गए हैं। इन चित्रों में प्रतीकों द्वारा विभिन्न विषयों जैसे सुख, दुःख, प्रेम, क्रोध, श्रृंगार आदि दर्शाए गए हैं।

यामिनी राय के एक चित्र 'मां एवं शिशु' के अंतर्गत एक विशिष्ट प्रेमभाव व वात्सल्य प्रकट होता है जो मुख्य रूप से प्रतीकात्मक चित्रण ही हैं। प्रतीकात्मक चित्रण द्वारा आधुनिक काल की चित्रकला में भी वह चित्रा.तियों में भी एक अनूठा प्रयोग है। प्रतीकों के प्रयोग द्वारा आधुनिक भारतीय चित्रकला में भी सूक्ष्म रूप में बड़े भावों व अर्थों को चित्रित किया गया है। अतः कहा जा सकता है कि भारतीय आधुनिक शिक्षाकृतियों में प्रतीकों का बहुत ही विशिष्ट एवं मार्मिक चित्रण किया गया है। चांदनी रात व रात के विहंगम दृश्य को भी प्रतीकात्मक रूप में चित्रित किया गया है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

भारतीय कला के आधुनिक रूपों में कलाकारों ने बहुत ही विशिष्ट व मार्मिक प्रतीकात्मक अंकन अपनी कला में दर्शाया है। कलाकारों ने अपने मन की अभिव्यक्तियों को मुख्य रूप से आधुनिक जीवन व जीवन के प्रतिक्रियाओं का चित्रण प्रतीक रूप में किया है। इसके अंतर्गत ज्यामितीय रूपों को भी मनोहारी रूप में प्रकट किया गया है। विभिन्न देवी–देवताओं की प्रतीक स्वरूप यंत्रों का चित्रण किया गया है। 'श्री विद्या' के साथ चित्र को चित्रित 'यंत्र' सुंदर प्रतीकार्थों की व्यंजना करता है।

यंत्र का पूर्व रूप भी है। इसके उर्ध्वगामी और अधोगामी त्रिभुज सृष्टि क्रिया में काम करती हुई सभी शक्तियों के प्रतीक हैं। स्वास्तिक रूप में एक कल्याणकारी ज्यामितीय प्रतीक का अंकन यज्ञ वेदिकाओं के समीप किया गया है। विभिन्न ग्रंथों जैसे 'काव्यप्रकाश', 'नाट्यशास्त्र' आदि में भावों की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति करने वाली बताया है। प्रतीकात्मक चित्रण के अंतर्गत गंगा, यमुना, चंद्र, सूर्य को देवत्व प्रदान करते हुए उनकी सुंदर आकृतियां बनाई गई हैं।

प्रतीक चित्रण का भारतीय चित्रकला की विभिन्न शैलियों व विषयों का एक अमिट योगदान है तथा भारतीय चित्रकला के अंतर्गत प्रतीकों द्वारा विभिन्न प्रकारों को चित्रित किया गया है। भारतीय प्रागैतिहासिक कला, भित्ति चित्रण, भारतीय लघु चित्रकला और लोक कला में प्रतीकों का चित्रण नए–नए विषयों व अर्थों में सुंदरता पूर्वक हुआ है। भारतीय कला के आरंभ में शुरू होकर आधुनिक काल तक विभिन्न पहलुओं को प्रतीकों के द्वारा चित्रित किया गया है, जिसके अंतर्गत प्रतीक अपने आप में एक अमूल्य योगदान रखते है। प्रतीकों द्वारा भारतीय चित्रकला में सूक्ष्म रूप में बड़ें अर्थ एवं मानव कल्पनाओं को चित्रित किया गया है। प्रतीकों के द्वारा मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं को चित्रित किया गया है। भारतीय चित्रकला के लगभग सभी रूपों में प्रतीक अंकन हुआ है। प्रागैतिहासिक काल व प्राचीन काल से आरंभ होकर लघु रूप व आधुनिक चित्रकला में प्रतीकात्मक अंकन हुआ है वह प्रतीक चित्रण का एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। अतः कहा जा सकता है कि भारतीय चित्रकला में प्रतीकों का विशिष्ट स्थान रहा है। प्रतीक चित्रण द्वारा कला के प्रारंभ से लेकर आधुनिक युग की चित्रकला में एक अभूतपूर्व योगदान व विशिष्ट छाप छोड़ी गई है। प्रतीक चित्रण का एक अलग ही प्रभाव है, जिससे हमारे भारतीय चित्रकला अपने आप में एक विशिष्टता लिए हुए हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. शर्मा, डॉ0 मनोरमा : भारतीय कला का संक्षिप्त विवेचन, स्टार पब्लिकेशन, आगरा।
2. आचार्य, डब्ल्यू0 जी0 : कांगड़ा पेंटिंग, लंदन 1952.
3. सक्सेना, डॉ0 एस0 बी0 एल0 : भारतीय चित्रकला, सरन प्रकाशन।
4. आचार्य, डब्ल्यू0 जी : इंडियन पेंटिंग्स इन पंजाब हिल्स, लंदन 1952.
5. प्रताप, डॉ0 रीता : भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, 14वॉ संस्करण, 2013 जयपुर।
6. अग्रवाल, डॉ0 गिर्राज किशोर : कला और कलम, अशोक प्रकाशन मंदिर, 1992 अलीगढ़।
7. सिंह, चंद्रमणि : सेंटर ऑफ पहाड़ी पेंटिंग, नई दिल्ली 1982.
8. फ्रेन्च, जे0 सी0 : हिमालय आर्ट, लंदन, 1932.
9. वर्मा, श्री परिपूर्णानंद : प्रतीक शास्त्र, हिंदी समिति, सूचना विभाग, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
10. गुप्त, डॉ0 जगदीश : प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
11. विश्वकर्मा, डॉ0 कुमारिल : भारतीय कला और कलाकार, प्रकाश बुक डिपो, बड़ा बजार, बरेली।
12. शर्मा, डॉ0 अंबिका : भारतीय चित्रकला का उद्देश्य पूर्ण अध्ययन, मानसी प्रकाशन 2004.
13. वर्मा, अविनाश बहादुर : भारतीय चित्रकला का इतिहास, प्रकाश बुक डिपो, बड़ा बाजार, बरेली।
14. अग्रवाल, आर0 ए0 : भारतीय चित्रकला का विवेचन, लॉयल बुक्स, मेरठ।

*****